नव निर्माण

भाग – १

विलास जैन

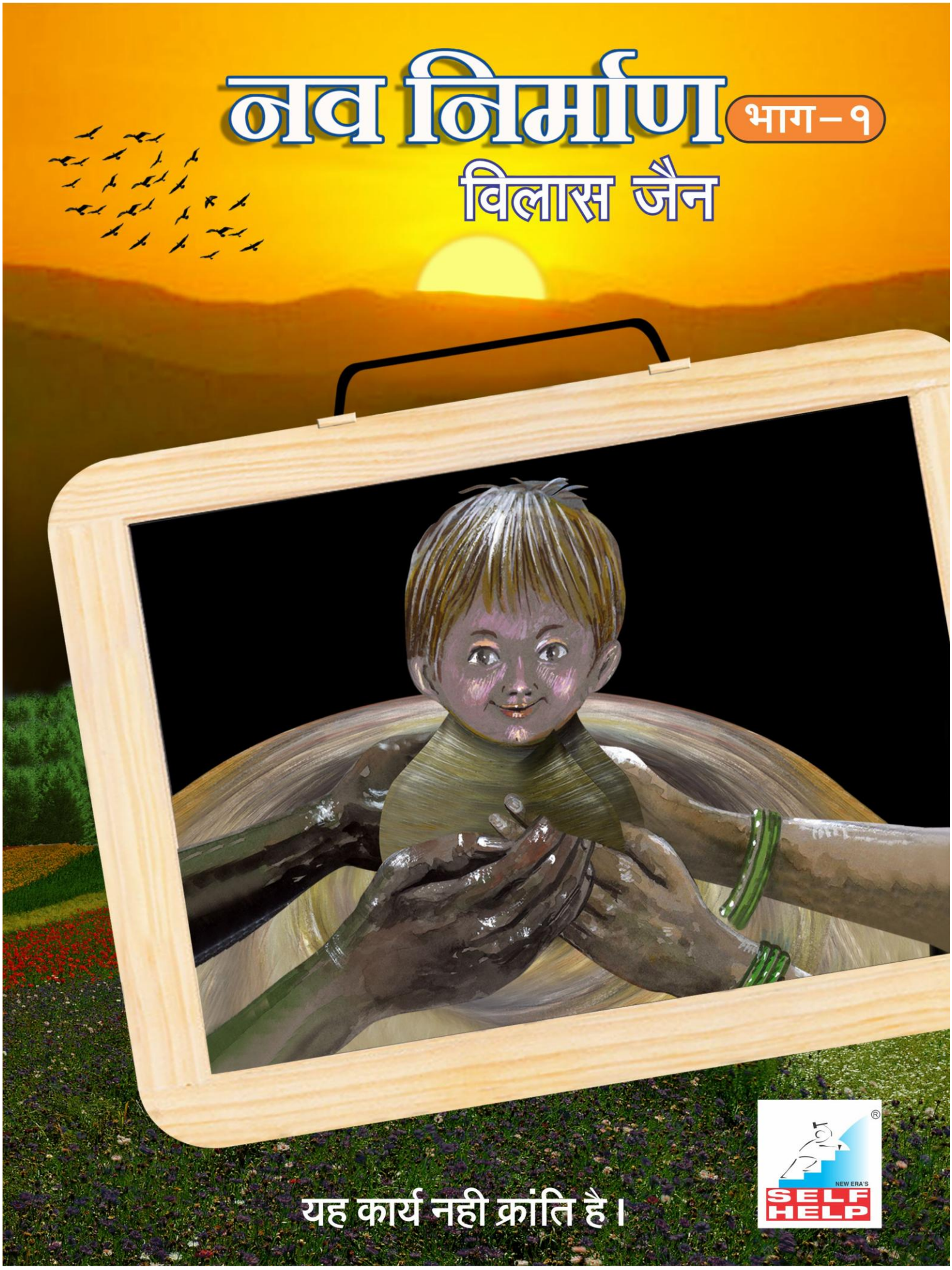

यह कार्य नही क्रांति है।

NEW ERA'S SELF HELP

यह पुस्तक समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षकों को
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्की
अपने बच्चो कि
धरोहर मानकर
जतन करते है।

NEW ERA'S
SELF HELP

प्रकाशन :	प्रथम
प्रकाशक :	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटिंग) इंडिया लि. जलगांव-४२५००१ (महा.)
लेखन :	विलास जैन
प्रतिया :	५०००
चित्रांकन :	अविनाश मोघे
अक्षरांकन :	पुष्प ग्राफिक्स, जलगांव
निर्मिति :	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटिंग) इंडिया लि. जलगांव-४२५००१ (महा.)
मुद्रक :	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव

© New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Rights Reserved 2010
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company Reg. No. : U 51909 MH 2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित
पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रूप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रस्तावना

बढ़ती स्पर्धा के कारण स्कूलों में अभ्यास क्रम बढ़ रहा है। दूसरी तरफ जीवन की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने माँ–बाप की व्यस्तता बढ़ रही है। इसी के कारण हम इच्छा और साधन होते हुए भी हमारे बच्चों को हमारी परम्परा, संस्कार, अच्छी आदतें जैसी अमूल्य चीजें नहीं दे पा रहे हैं। आज हम वह सब नहीं कर पाते जिससे कि आने वाली पीढ़ी सुसंस्कृत और सुदृढ़ बने। जीवन की छोटी छोटी बातें जो अच्छा इन्सान बनने के लिए जरूरी है। वह बच्चों के सामने सरल शब्दों में रखना, यह इस किताब का प्रथम लक्ष्य है। हमारे बच्चे सिर्फ पैसे कमाने की मशीन नहीं, बल्कि पैसों का सदुपयोग कर एक अच्छा समाज बनायें। जीवन का भरपूर मजा उठायें और सही मायने में सुखी समाधानी हों। ऐसा पवित्र और उतना ही अनूठा ध्येय हमारा है। इसी के साथ बच्चों का जीवन के हर पहलू के तरफ देखने का नजरिया बदले। उन्हें एक सकारात्मक नजरिया मिले। इस बात का ध्यान हर कविता में रखा गया है।

हम जो लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। उसमें माता, पिता और गुरूजनों का सहकार्य, प्रेम और सुझाव अनिवार्य होगा। पच्चीस – पच्चीस कविताओं के चार खण्ड पहले वर्ग से लेकर तो नववी कक्षा के बच्चों के लिए बनाये गये हैं। जीवन के कुल १०० महत्वपूर्ण विषयों पर कवितायें रची गई हैं। अपने बच्चों के मन पर इसमें से कुछ कवितायें भी हम गड़ा सके तो वे कभी असफल, निराश या बीमार नहीं होगें ऐसा हमारा मानना है। और हम सुनहरे भविष्य में एक सुदृढ़ कड़ी जोड़कर हमारा सामाजिक दायित्व पूरा कर सकेगें। अन्त में इतना ही लिखूंगा कि इस किताब से मिलनेवाली पूरी राशि समाज, पर्यावरण की सुरक्षा और पेड़ पौधे लगाने में ही खर्च होगी। जिससे हम आनेवाली पीढ़ी के लिए एक सुदृढ समाज, सुखद पर्यावरण एवं सुन्दर धरती छोड़ सकेगें।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

सूची

अ.नं.	विषय	पृष्ठ क्र.
१)	स्कूल	१
२)	मम्मी पापा	२
३)	दादा दादी	३
४)	नाना नानी	४
५)	चंदामामा	५
६)	आलस	६
७)	बारिश	७
८)	साफ–सफाई	८
९)	पेड़ो से प्रेम	९
१०)	डरना मना	१०
११)	हम क्या खायें	११
१२)	हम क्या पियें	१२
१३)	हम क्या बोलें	१३
१४)	हम क्या सुनें	१४
१५)	हम क्या देखें	१५
१६)	बच्चो हँसो	१६
१७)	गुस्सा छोड़ो	१७
१८)	बच्चो खेलो	१८
१९)	बच्चो पढ़ों	१९
२०)	बड़ो का आदर	२०
२१)	छोटों को प्यार	२१
२२)	आज्ञा का पालन	२२
२३)	विविधता में एकता	२३
२४)	सम्मान	२४
२५)	हमारे त्योहार	२५

स्कूल

स्कूल लगता हमको,
देखो कितना प्यारा।
रंग बिरंगे फूलों का,
बाग है हरा–भरा।

हम सब बच्चों का,
है यह दुलारा।
पढ़ेगें हम यहाँ,
जीवन जियेगें न्यारा।

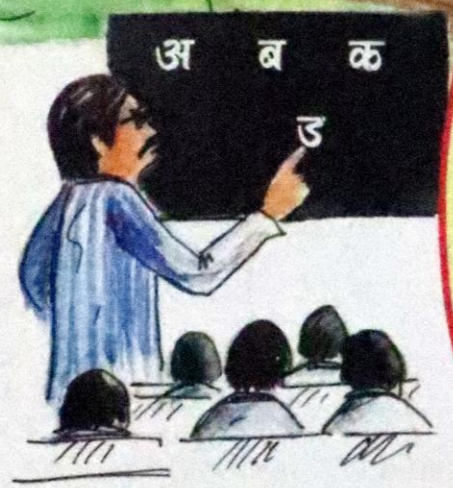

मेहनत लेते गुरूजन,
बनें हम किसी का सहारा।
खेलो और पढो कहता,
ऐसा स्कूल हमारा।

सतकर्मों का पाठ पढ़ाता,
ज्ञान का भंडार भरा।
देश सेवा करना कहता,
प्रथम कर्तव्य हमारा।

वीरों की कहानी सुनाकर,
इसने हममे हौंसला भरा।
चाहत है बना रहे,
इससे नाता हमारा।

मम्मी पापा
(माता-पिता)

संस्कार और सुरक्षा देना,
है मम्मी पापा का काम।
सुविधा और साधन देते,
है उनके प्रेमका परिणाम।

रखकर उनके आगे माँगे,
करते उनकी नींद हराम।
गुस्सा हमारा सहकर भी,
देते हमको कितना आराम।

चाहते वह बड़े होकर,
कमायें हम खूब नाम।
हाथ ना फैलायें कभी,
करे मेहनत सुबह शाम।

दु:ख सहकर भी हमारा,
करते नहीं कभी विश्राम।
कहते कल पर ना छोड़ो,
कभी अपना कोई काम।

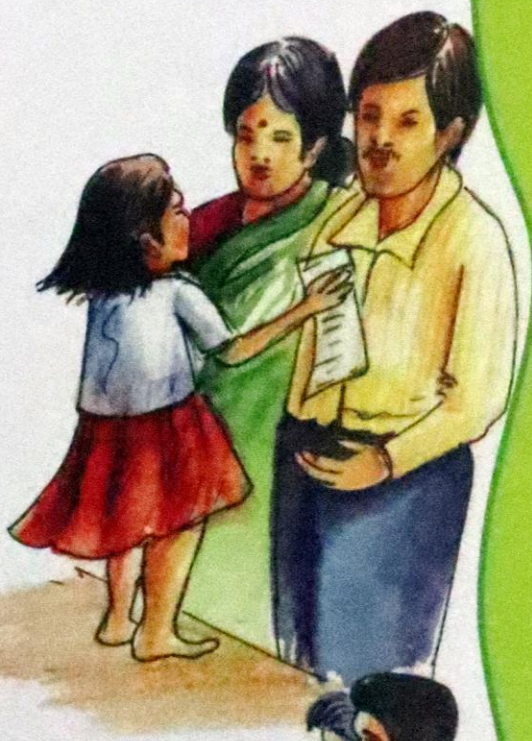

दादा-दादी

ऐनक लगाकर झुककर चलते,
लगते जैसे प्यार भरी वादी।
रहते हैं हमारे सुंदर घरमें,
हमारे परम प्रिय दादा-दादी।

घर की बढ़ाते वह शान,
जनम दिन हो या शादी।
शरीर थका हुआ फिर भी,
अनुभव से भरे दादा-दादी।

सिखलातें है हम खुद से,
कैसे दूर करे बरबादी।
कितनी भी मुश्किलें आये,
डरना नहीं कहते दादा-दादी।

दुष्कर्म और दुर्व्यवहार,
कहते अपनो से करो जुदी।
मंदिर जाकर रोज सुबह,
प्रार्थना करते दादा-दादी।

अनुशासन और सच्चाई का,
हम सबको वह पाठ पढ़ाते।
किसके मन मे क्या छिपा,
जान जाते हमारे दादा-दादी।

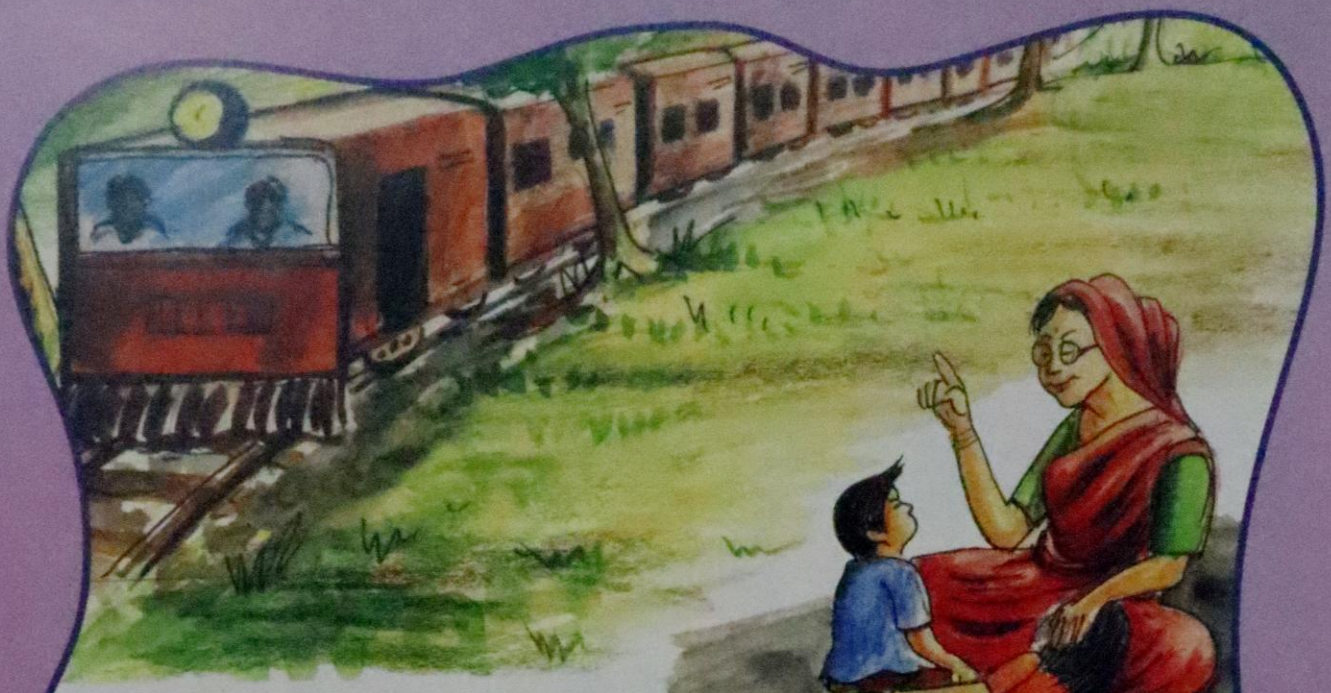

नाना–नानी

जब – जब आती हैं,
छुट्टियाँ ये सुहानी।
बहुत याद आते हैं,
हमको नाना–नानी।

नानी सुनाती है,
हमको बढ़िया कहानी।
आती नहीं जब तक,
हमको निदिंया रानी।

नाना कहते बच्चों,
तुम्हें है दुनिया रचानि।
खूब मेहनत करो,
व्यर्थ ना जाये जवानी।

नानी बनाती मिठाईयाँ
पड़ती है हम को खानी
मामा–मामी के संग
खूब करते हम शैतानी।

चँदामामा

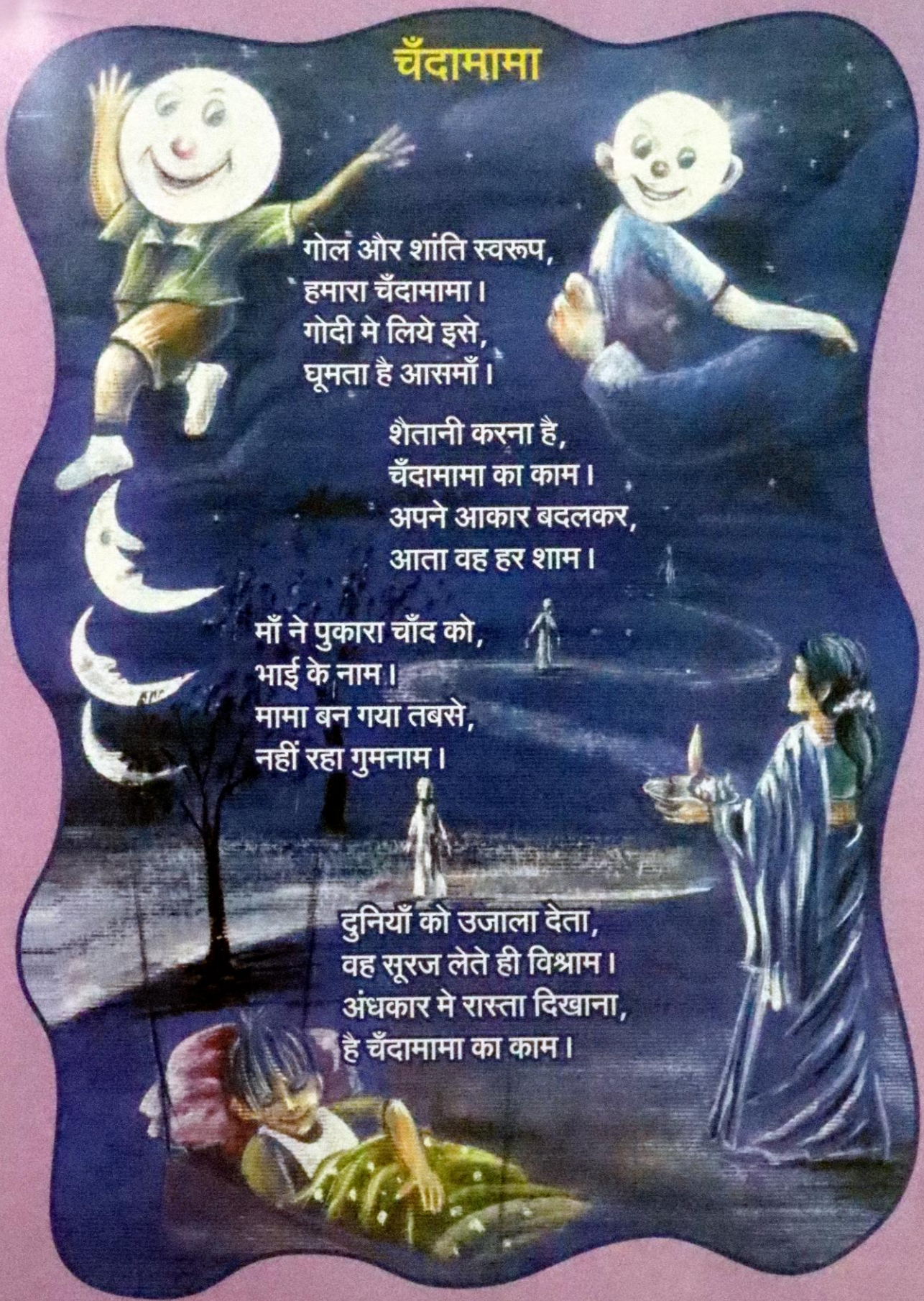

गोल और शांति स्वरूप,
हमारा चँदामामा।
गोदी मे लिये इसे,
घूमता है आसमाँ।

शैतानी करना है,
चँदामामा का काम।
अपने आकार बदलकर,
आता वह हर शाम।

माँ ने पुकारा चाँद को,
भाई के नाम।
मामा बन गया तबसे,
नहीं रहा गुमनाम।

दुनियाँ को उजाला देता,
वह सूरज लेते ही विश्राम।
अंधकार मे रास्ता दिखाना,
है चँदामामा का काम।

आलस

कुछ पाने से पहले,
दूर भगाओ आलस।
इसे दूर करने,
जुटाओ तुम साहस।

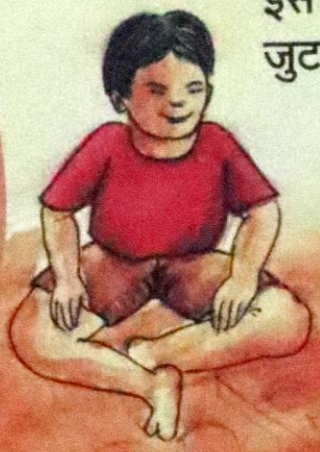

जब किसी बच्चे में,
घुस जाता आलस।
इच्छा होते हुए वह,
करता नहीं प्रयास।

अच्छा बच्चा होने से,
रोकता तुमको आलस।
कुछ कर दिखाने का,
रहता नहीं विश्वास।

आलस बुरी बला है,
मौका देना इसे बकवास।
एक मौका मिलते ही,
रहता इसका सदा वास।

बहाने बनाना सिखाता,
हर बार तुम्हें आलस।
गलत बातों को सही कहता,
करता यह दुस्साहस।

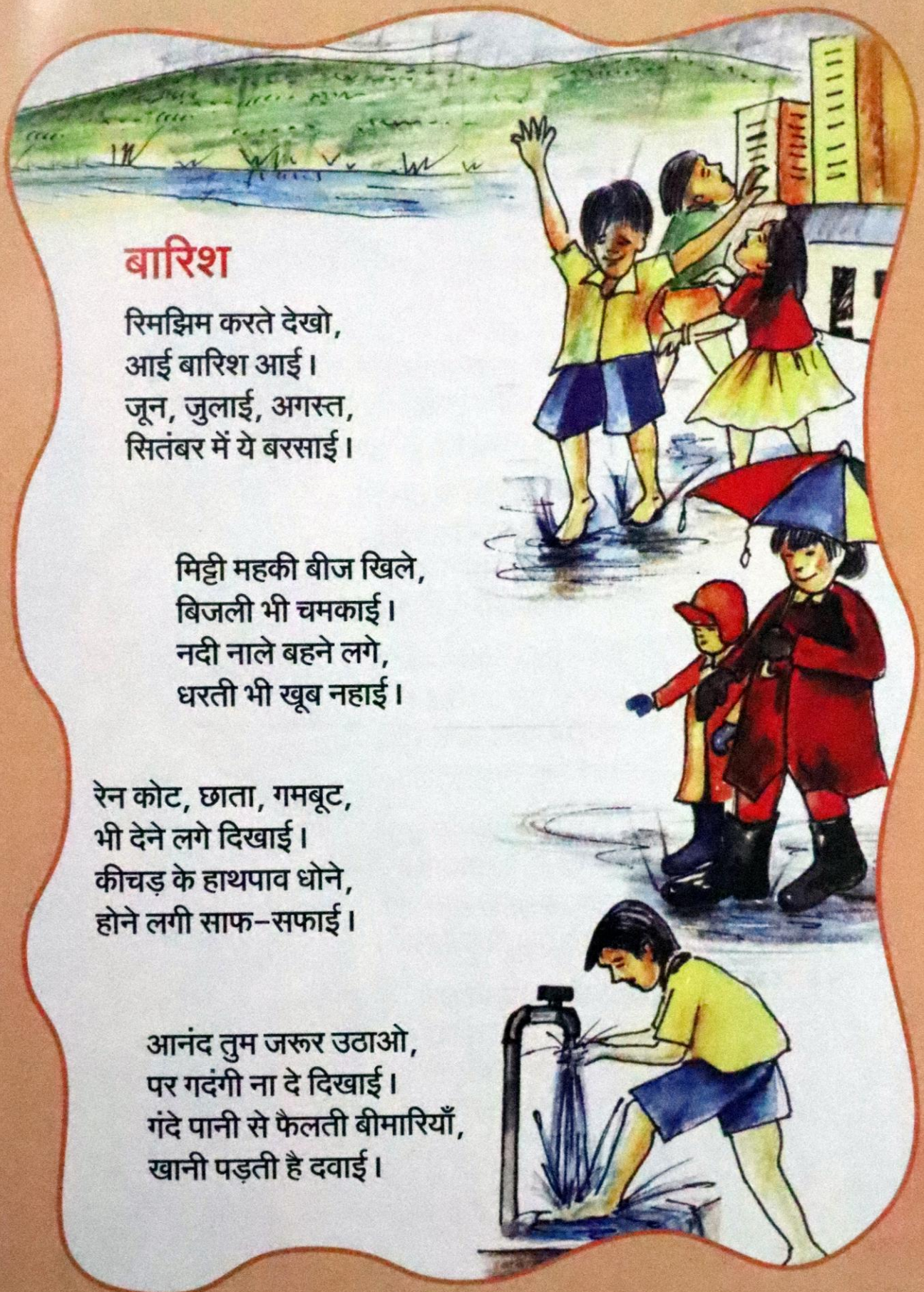

बारिश

रिमझिम करते देखो,
आई बारिश आई।
जून, जुलाई, अगस्त,
सितंबर में ये बरसाई।

मिट्टी महकी बीज खिले,
बिजली भी चमकाई।
नदी नाले बहने लगे,
धरती भी खूब नहाई।

रेन कोट, छाता, गमबूट,
भी देने लगे दिखाई।
कीचड़ के हाथपाव धोने,
होने लगी साफ-सफाई।

आनंद तुम जरूर उठाओ,
पर गदंगी ना दे दिखाई।
गंदे पानी से फैलती बीमारियाँ,
खानी पड़ती है दवाई।

साफ–सफाई

बच्चों गर तुमने,
नहीं रखी साफ–सफाई।
तो लेनी पड़ेगी तुम्हें,
सुई और दवाई।

बीमार होने से तुम्हारी,
डुबने लगेगी पढ़ाई।
हर अंग साफ रखो,
नाखून ना दें दिखाई।

हाथ धोकर भोजन करना,
देखो है एक अच्छाई।
कपडे रूमाल साफ रखो,
इनकी हो रोज धुलाई।

रूमाल रखो मुँह पर,
छीकों या लो जंभाई।
यही सिखाओ दूसरो को,
इसने बिमारी है फैलाई।

रोज नहाओ मेहनत करो,
चीजें खाओ धुली धुलाई।
लक्ष्मीजी वहीं वसती है,
रहती जहाँ साफ–सफाई।

पेड़ो से प्रेम

बच्चों पेड़ो से तुम,
प्रेम करना सीखो।
अपने नन्हे हाथों से,
तुम नई कहानी लिखो।

पेड़ों पर रहते पंछी,
देखो कैसे रिझाते हमको।
पेड़ हमको फल देते,
इन पर पत्थर ना फेको।

पेड़ों पर निर्भर पर्यावरण,
यह तुम ध्यान में रखो।
पेड़ों से बनी दुनियाँ प्यारी,
पेड़ काटने से तुम रोको।

गर्मी से हमको बचाते पेड़,
यह बात जरूरी सीखो।
पेड़ों से मिले प्राणवायु,
इन्हें आदर से देखो।

डरना मना

बच्चों डरना है,
तुम्हे मना।
पनपति इससे दिलमे,
हीन भावना।

अच्छी बात है,
गलतियों से बचना।
गलतियों में सुधार कर,
आत्मबल बढ़ाना।

सिखोगे गर तुम,
बड़ो की बात मानना।
कम हो जायेगा,
तुम्हारा किसी से डरना।

सशक्त तन–मन में,
साहस तुम भरना।
सच्ची बात कर,
भूल जाओगे डरना।

लगन से मेहनत,
तुम खूब करना।
यही सिखलायेगें तुम्हें,
कैसे डरसे लढ़ना।

डरते डरते तुम,
कभी ना जीवन जीना।
सुंदर यह जीवन,
व्यर्थ जायेगा वरना।

हम क्या खायें ?

कितने सारे पदार्थ,
देखो आये बन ठन।
तुम अब सीखलो,
कैसे रोकें अपना मन।

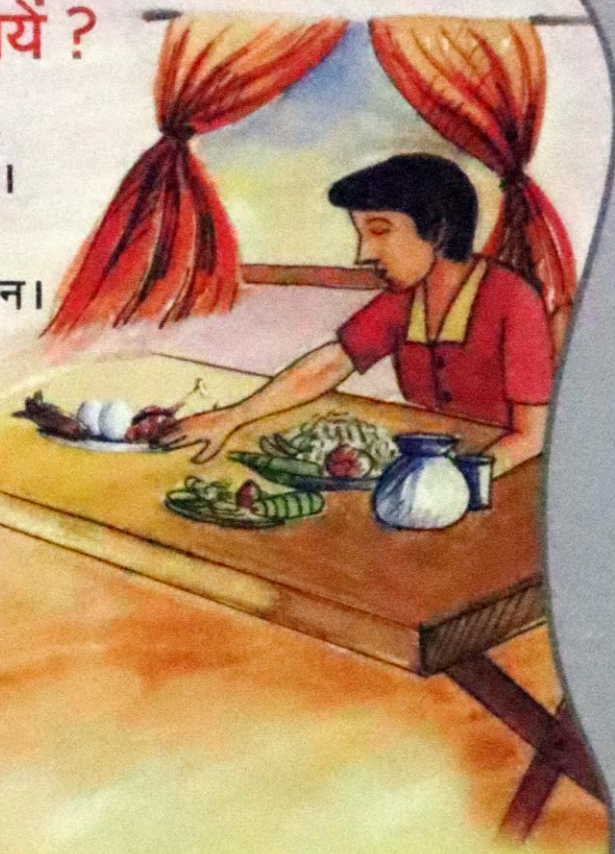

खाने से बनता,
स्वस्थ शरीर और मन।
हमें देवता समान,
लगे शुद्ध सात्विक अन्न।

खाने में मात्रा नहीं,
गुणवत्ता हो प्रथम।
जो भाता वह नहीं,
हजम हो ऐसा भोजन।

खाते समय खूब चबाओ,
ना हो कोई मनन।
दूरदर्शन कम देखे,
सिर्फ भोजन करें ग्रहन।

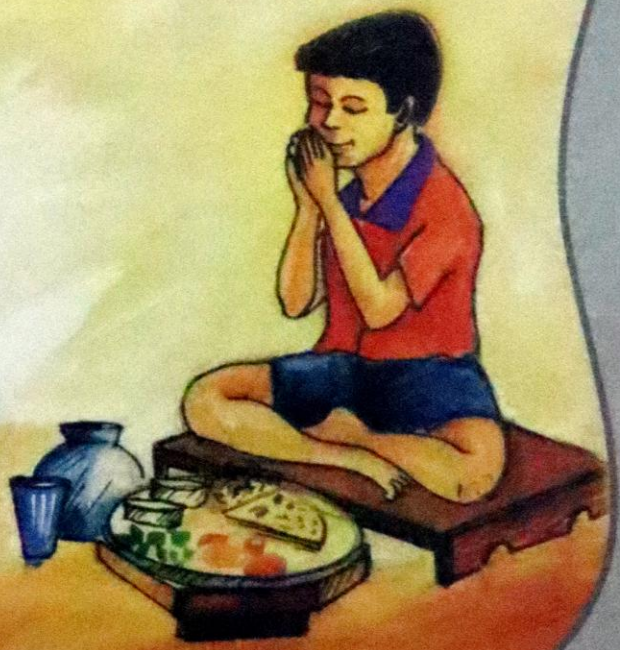

हम क्या पीयें ?

शुद्ध जल, दूध और,
ताजे फलों का रस।
पियेगें हम सिर्फ यही,
बाकी चिजों को कहेगें बस।

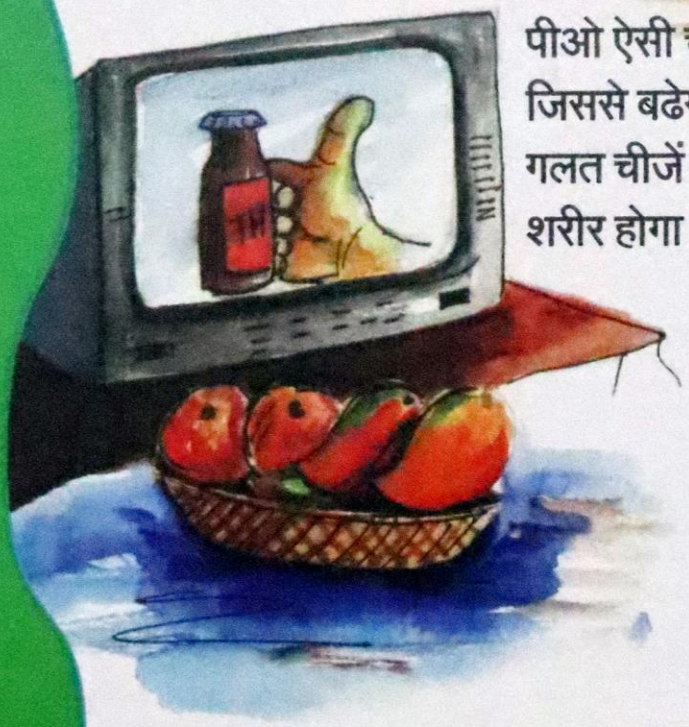

पीओ ऐसी चीजें,
जिससे बढेगा साहस।
गलत चीजें पीनेसे,
शरीर होगा निरस।

रिझाते हमको विज्ञापन,
न रखो इनपर विश्वास।
इनसे ज्यादा स्वादिष्ट लगते,
ताजे फलों के मधुर रस।

शुद्ध जल, मधुर वाणी,
रिश्ता इनका है खास।
शुद्ध जल पीनेवालों के,
गलेमे मधुरता का वास।

खूब सारा पानी पीना,
आदत है बहुत विशेष।
बिमारियाँ दूर भागेगी,
मन में भरा रहेगा जोश।

हम क्या बोलें ?

बात तुम ऐसी बोलो,
सुननेवाला हर बात पर डोले।
सुनकर मधुर बोल तुम्हारे,
वह तुम्हारा होले।

निडरता से हरदम अपनी,
बात तुम बोले।
बोलते समय तुम,
ना लेना, हिचकोले।

अभ्यास कर तुम हरदम,
आत्मविश्वास से बोले।
सच्चाई की बात तुम्हारी,
ध्यान सबका खीचले।

मधुर बोलो से तुम,
सबका दिल जीत ले।
प्रशंसा कर सबकी,
उनका धैर्य बढ़ाले।

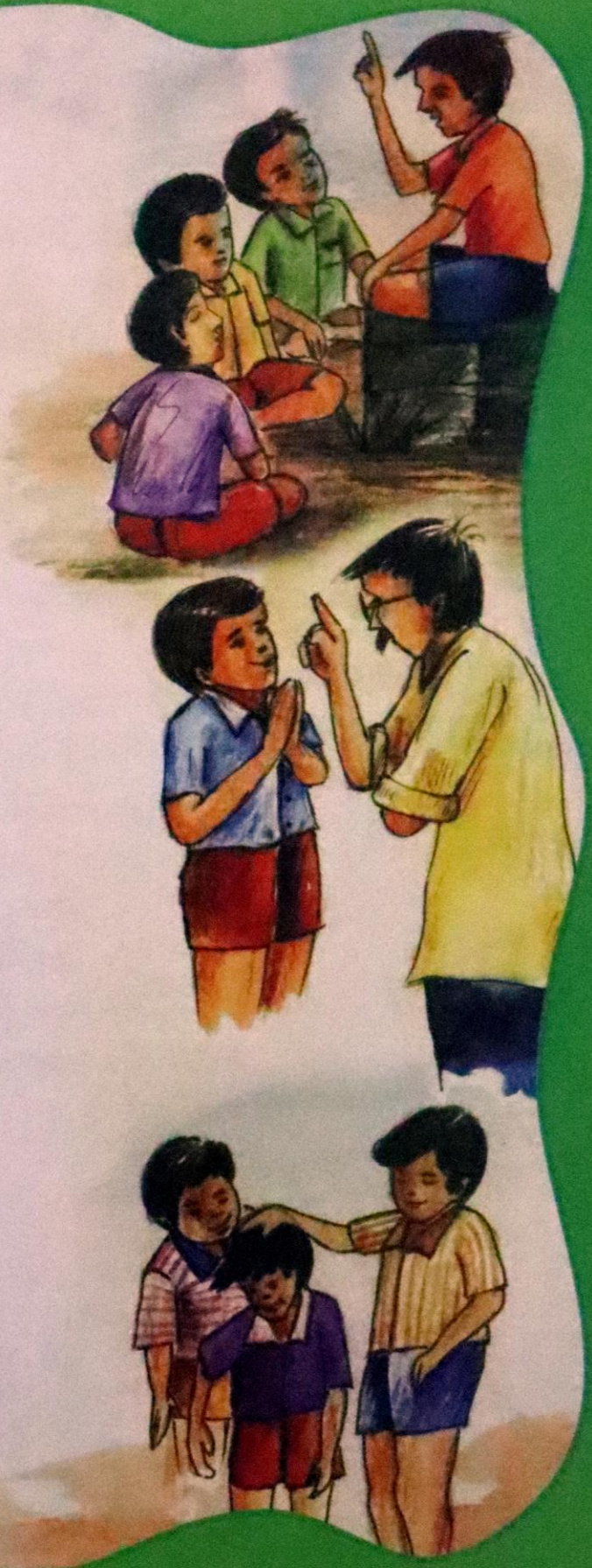

हम क्या सुने ?

बच्चों आओ अब हम,
अच्छे मनोरंजन को ही चुने।
सुगम संगीत, भजन प्रवचन,
हास्य विनोद हि सुनें।

उम्र से बच्चे हम,
विचारों से बडा बनें।
वीरों की कहांनी सुनकर,
हौसले बढ़ाये अपने।

मधुर संगीत से बीमारियाँ,
अब लगी है हटने।
मधुर तंरगे मन में,
उल्हास् लगी है भरने।

मधुर, सात्विक और आध्यात्मिक
बातें हि हम सुनें।
सुनहरे भविष्य का हर रोज,
एक पक्का धागा बुनें।

कर्कश, कडवे, कुंठा भरे,
वचन ना हम सुनें।
स्वभाव् बदल सकता है,
बच्चे अभी है हम नन्हें।

हम क्या देखे ?

जो हम देखते है,
वह मन में बस जाता।
फिर वह हमारे,
आचरण मे उतर आता।

बुरा मत देखो,
बापूजी ने कहा था।
बुरी चीज देखने वाला,
बुरा काम करता।

गलत दृश्य देखने से,
पनपति भय और चिंता।
पवित्र चीजों का दर्शन,
लाती जीवन में पवित्रता।

भड़काने वाला दृश्य,
समाज मे हिंसा फैलाता।
स्नेहमय प्रसंग देख,
आदमी शांति को अपनाता।

अच्छा बच्चा हरदम,
अच्छी बातें देखता।
खुद को गुमराह होनेसे,
फिर वह रोखता।

बच्चों हँसो

हँसना और खिलखिलाना,
मानव को मिला उपहार।
जिसने हँसना सीख लिया,
उसे जीने का अधिकार।

रोने वालों के मन में,
देखो दु:ख कितना अपार।
हँसने वाले मानते,
जीवन के प्रति आभार।

भय और चिंता कैसी,
ऊपर वाला साथ हर बार।
हँसने वाले हँसते रहते,
होते सब संकटो से पार।

बच्चों अपने दुखों पर,
देखो मुस्कूराकर एकबार।
कैसे उड़ जाते दु:ख,
तुम सीखो इस बार।

हँसने से तुम सुंदर दिख,
बन जाओगे गले का हार।
खिले हुये गुलाब की तरह,
तुमको मिलेगा खूब प्यार।

गुस्सा छोड़ो

गुस्सा घुसा हुआ है,
कई बच्चों के मन मे।
रोक रहा है उन्हें,
सबका प्यारा बनने मे।

दुश्मनी है बच्चों गहरी,
समझदारी और गुस्से में।
समझदार बच्चों को ही,
मिला प्यार दुनिया में।

लढ़ना बुरा काम बच्चों,
सोच लो अपने दिल में।
पराया होता है अपना,
जादू है मुस्कुराने में।

हर जरूरत पूरी होना,
संभव नही जीवन में।
गुस्सा होने से पहले,
रखलो यह बात ध्यान में।

गलतीयाँ पे हमारे गर,
डाटता कोई गुस्से में।
क्या हम बिता पाते,
अपना जीवन आनंद में।

बच्चों खेलो

बच्चों खेलो,
तुम खूब खेलो।
सुहाने बचपन का,
तुम मजा ले लो।

खेल खेल में तुम,
खेल ऐसा खेलो।
सब तुम्हारे और,
तुम सबके होलो।

खेल भावना दिल मे रखकर,
दुनिया मे ये जिलो।
हार जीत लगी हुयी,
इसको तुम गले लगालो।

जीवन है खेल अनोखा,
इसमें तुम विजयी होलो।
सद्भावना और भाईचारे के,
खूब रंग उड़ालो।

विविध ऋतु के खेलो से,
तुम अब वाकिफ होलो।
बदलते मौसम में ढलने का,
गुण निराला ले लो।

खेलों से बढ़ता शरीर,
और बुद्धि भी बढ़वालो।
संकटो से संघर्ष करने का,
हौंसला तुम पालो।

बच्चों पढ़ो

पढ़ने से ही तुम,
दुनियाँ को जान पाओगें।
दूसरों के अनुभव का,
तुम मजा उठाओगें।

ज्ञान के बिना,
मानव नही बनोगे।
जीवन के संकटों से,
बोलो कैसे लढ़ोगें।

पढ़ने के कारण,
काम आसान होगें।
समझ तुम्हारी बढ़ेगी,
तुम विजेता बनोगें।

न पढ़ने वाले,
खूब मेहनत करेगें।
पूरा जीवन अपना,
गरीबी में काटेगें।

गर मौका मिला,
पशु भी पढ़ेगें।
ज्ञान को पाने,
मेहनत खूब करेगें।

बड़ो का आदर

आदर देने से,
यह खूब बढ़ता।
आदर देने वाला ही,
सिर्फ इसे पाता।

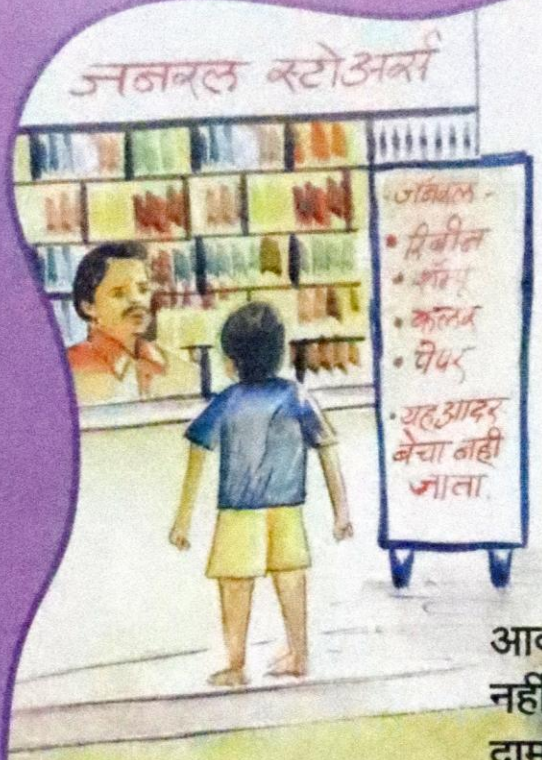

आदर बाजार मे,
नहीं बिका जाता।
दाम में यह नही,
कही से खरीदा जाता।

आदर पाने मानव,
यह जीवन जिता।
आदर मिलते ही,
खूब आनंद पाता।

बड़ों के प्रति आदर,
जिस बच्चे मे होता।
वह अच्छे बच्चे में,
देखा और गिना जाता।

जो बच्चा आदर से,
जीता और पेश आता।
वो ही आदर पाने का,
सही हकदार होता।

छोटों को प्यार

छोटे बच्चे भाई बहन,
इनके तुम बनो आधार।
जीतो इनका दिल,
करो इन्हें तुम प्यार।

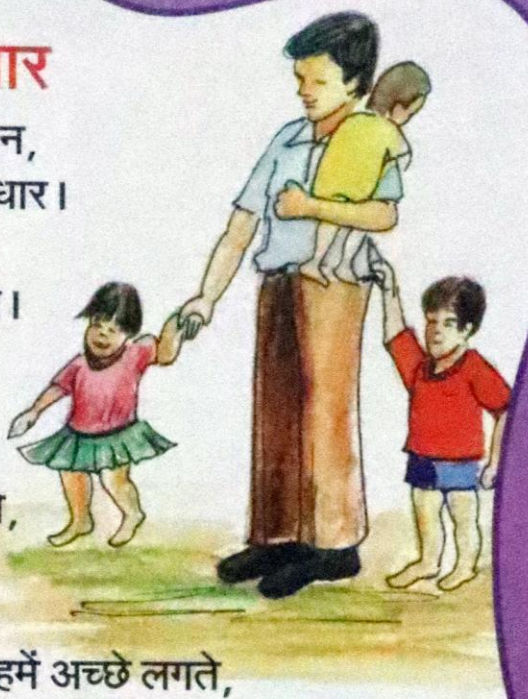

पेड़ पौधे पशु पक्षी,
इनकी एक ही पुकार।
छोटो की तुम मदद करो,
दो उन्हें दुलार।

बच्चे हमें अच्छे लगते,
कितना प्यारा उनका व्यवहार।
हँसते और खिलखिलाते,
मिलता जब इन्हें प्यार।

सीखाओं इन्हे विश्वास रखना,
इन पर विश्वास रखकर।
बसाओ नयनो में सपना,
इनका सपना साकार कर।

देखो इनकी कोमल भावना,
टूट न जाये चिल्लाकर।
गले लगाये वह सबको,
खुद बड़े होकर।

आज्ञा का पालन

बच्चों करो तुम,
अच्छी आज्ञा का पालन।
ज्ञान और आशीर्वाद पाओगें,
बन जाओगें विद्वान।

कईयों ने जान देकर भी,
किया आज्ञा का पालन।
सम्मान किया गुरूजनों का,
पाना चाहा वीर मरण।

देखो हमारे फौजी भाई,
जानते आज्ञा पर जान गंवाना।
एकलव्य ने दिया अंगूठा,
सिखलाया श्रेष्ठ शिष्य बनना।

ना रहे वो शारीरिक श्रम,
न मागें कोई तुम्हारी जान।
बड़ो की बातों का आदर कर,
करो तुम उनका सन्मान।

विविधता में एकता

नन्हें नन्हें बच्चों आओ,
सब मिल कर खेल खेलें।
मिल जुल कर काम करेगें,
थक जायेगें हम अकेले।

पशु पक्षियों को भी,
हम साथ अपने लेलें।
पेड़ मस्तीमें झूम रहे,
साथ हम उनके होलें।

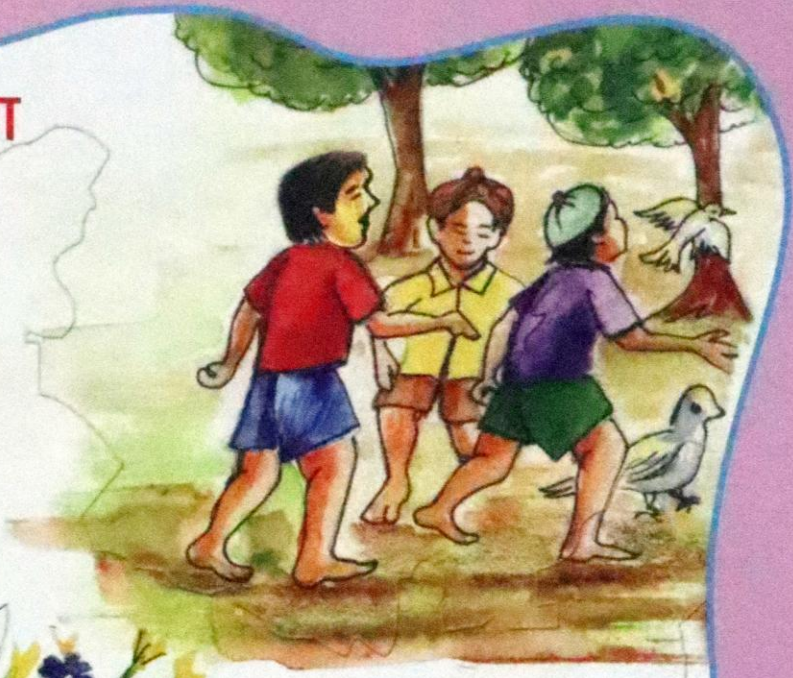

बगियों जैसा हर रंग,
अपने में समेटना सीखलो।
साथ रहते हुये भी,
अपनी अपनी सुगंध बिखेरलो।

विविधताओं से सजा हुआ,
हृदय में भारत देश भरलो।
खूब खेलों खूब पढ़ों,
एकता का सपना साकार करलो।

सम्मान

हे भगवान दे वरदान,
बच्चों के हृदय में।
भर सकें हम,
माँ भारती का सम्मान।

नदियों सी निर्मल बहे,
उनके मनकी भावना।
सागर से गहरी बने,
ज्ञान पाने की कामना।

जन्मे वीर वीरांगनायें,
चित्त विचलित हो ना।
हर काम की हो इज्जत,
बहे हर दिल में शुभकामना।

मानवता की खोज हो,
विज्ञान में हो संशोधन।
सारे विश्व को हम,
सिखायें शांति और अमन।

हिम्मत ना हो किसीकी,
दुस्साहस कोई करे ना।
हमसे टकराने वालों को,
पड़े हरदम पछताना।

हमारे त्योहार

त्योहार लाते हैं,
जीवन में उपहार।
चीजें मिलती हैं,
खाने को मजेदार।

त्योहारों के साथ,
आती है छुट्टियाँ शानदार।
बड़ों को मिलता आदर,
छोटों को प्यार।

आने चाहिए त्योहार,
जीवन में बार बार।
खुशियों का माहोल,
बना रहे लगातार।

त्योहार सिखाते हैं,
बंधुभाव और भाईचारा।
सबक सिखलाते हमको,
साथ रहने का न्यारा।

अध्यात्म और भक्तिभाव है,
त्योहारों के आधार।
संस्कृति और परम्परा के,
पालनहार होते हैं त्योहार।

आगामी समाजोपयोगी साहित्य

नवनिर्माण के अगले तीन भागों की कविताओं के विषय

SELF HELP Pulication

भाग – २

१) सामान्य ज्ञान
२) भाईचारा
३) संस्कार
४) सपने
५) मेहनत और लगन
६) आत्मविश्वास
७) लक्ष्य
८) इच्छा शक्ति
९) वतन
१०) मेरा देश
११) जानसे प्यारा देश
१२) बापू
१३) स्वाभिमान
१४) सच्चाई
१५) स्वस्थ शरीर
१६) स्वावलंबन
१७) सुनें ज्यादा बोलें कम
१८) तुम्हारे विचार
१९) विनम्रता
२०) प्रदूषण
२१) समय सूचकता
२२) जरूर करो
२३) कभी मत करना
२४) विद्यार्जन
२५) कैसे जियें

यह कार्य नही क्रांति है।

आगामी समाजोपयोगी साहित्य

नवनिर्माण के अगले तीन भागों की कविताओं के विषय

SELF HELP Pulication

भाग – ३

१) सावधानी
२) सार
३) सूविधा
४) स्वभाव
५) सहानुभूति
६) मदद करो
७) बचत
८) गुरूजनों का आदर
९) परोपकार
१०) उड़ान
११) शील
१२) धैर्य
१३) अमन और शांति
१४) हमारी जरूरतें
१५) आशा
१६) निराशा
१७) सहनशीलता
१८) स्वार्थ
१९) यश
२०) आराधना
२१) हस्ताक्षर
२२) आनंद
२३) शिष्टाचार
२४) संगत
२५) खुद्दारी

आगामी समाजोपयोगी साहित्य

SELF HELP Pulication

नवनिर्माण के अगले तीन भागों की कविताओं के विषय

भाग – ४

१) सकारात्मक सोच
२) करूणा
३) कर्मठता
४) नसीब
५) जियो और जीने दो
६) पानी का महत्व
७) रोगों से बचो
८) संगीत
९) खिलाड़ी वृत्ति
१०) हारना नहीं
११) स्तुति
१२) आशीर्वाद
१३) सृष्टी का आदर
१४) अपाहिजों के प्रति व्यवहार
१५) स्वस्थ मन
१६) विचलित न हों
१७) मनोरंजन
१८) वर्तमान मे जिओ
१९) पढ़ाई
२०) भविष्य बनाओ
२१) भूतकालसे सीखो
२२) दोस्ती
२३) अच्छी आदतें
२४) जड़ता

आभार

उन सब के प्रती
जो अच्छे है।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर है।
अच्छा हो इसलीये
प्रार्थना करते है।
अच्छा करने के लिये
कडी मेहनत करते है।
अच्छे व्यक्ती कि
दिल से प्रशंसा
करते है।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे
तन मन धन
देने को
तयार रहते है।

धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

NEW ERA'S SELF HELP

मेरा परिचय

पल पलं में
बदलते जीवन का
क्या दूं मै
अपना परिचय।
पाने से ज्यादा
लौटा सखू
यह मेरा है
दृढ़ निश्चय।
शिक्षा, उपाधि, अनुभव
का नही मोहताज
किसी का
अच्छा मनोदय।
लुप्त हो कुप्रथा
और बुरी आदतें
सुंदर, सुदृढ़,
समाज का
हो उदय।
अथक प्रयास
और ध्येय से
रचा कितना सुदंर
देखो मेरा परिणय।
कविताओं से निकले
अर्थ के सिवा
नहीं मेरा कोई
दूसरा परिचय।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

किमत
₹ १००/-